ISSN 2249-894X VOL. 4 | ISSUE. 6 | MARCH 2015

REVIEW OF RESEARCH

शैक्षणिक समुदाय के लिए ई–स्त्रोत : भारतीय परिदृश्य

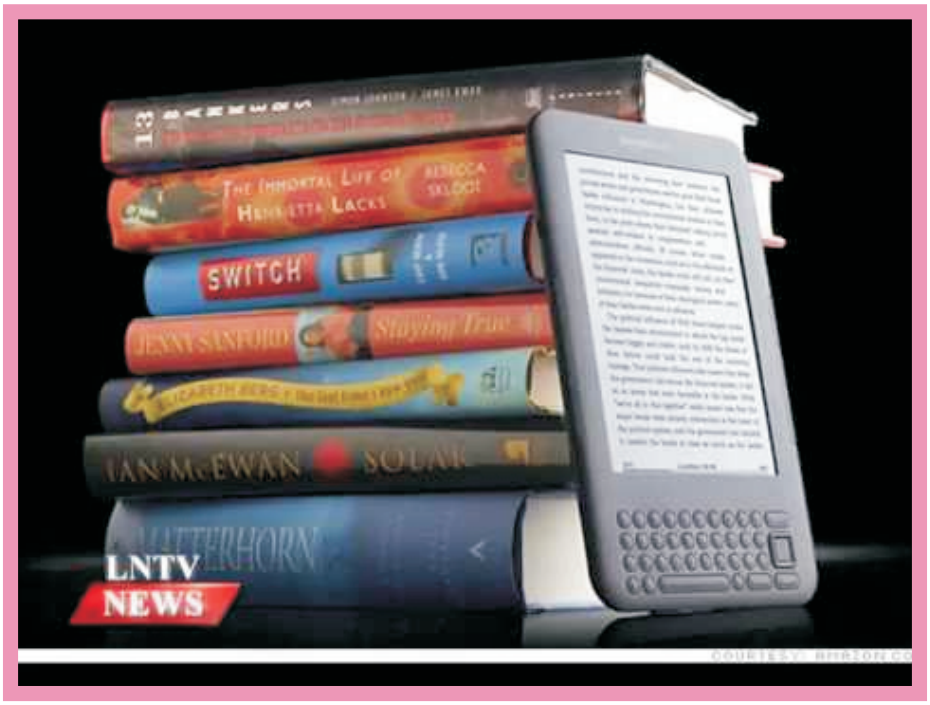

मनोज कुमार तिवारी ए रामनिवास शर्मा

ग्रंथालयी, के. डी. डेण्टल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, मथुरा (उ.प्र.)
सहायक ग्रंथालयी, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर.

सारांशः

आज के डिजिटल युग मे जहाँ ई–सूचनाऐं, ई–स्त्रोत संचार शिक्षा के समुदाय और समाज में अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गया और इस तरह की सूचनाऐं तरह–तरह के माध्यमों जैसे सामाजिक पत्रिकाऐं, पत्रिकाऐं डेटाबेस इत्यादि के माध्यमों से संचरित होती हैं। इस आलेख के द्वारा यह प्रयास किया जा रहा है कि इस तरह की सूचनाओं का संचार शिक्षा के इस युग मे कितना महत्वपूर्ण है तथा संचार के माध्यमों के रूप में पहचान बनाने वाले स्त्रोत जैसे– न्ळब्ए ष्छथ्स्ठछम्ज्ए ब्प्त्ए भ्स्प्छम्ज्ए थ्क्ै।ए प्।त्ए प्छक्ैज् आदि भारतीय ऐजेसियों की उपलब्धता को स्पष्ट करना।

आधार शब्द : सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी, ई–सूचना, ई–स्त्रोत, शैक्षणिक पुस्तकालय, डिजिटल पत्रिकाऐं ।

प्रस्तावना

सूचना संचार एवं प्रौद्योगिकी ने पुस्तकालय संग्रह में बड़ा परिवर्तन ला दिया है। इन्हीं परिवर्तनों की वजह से आज मुद्रित स्त्रोत डिजिटल बन गए हैं और इन्हीं कारणों की वजह से आज ज्यादातर पुस्तकालयों ने अपने पुस्तकालय संग्रह को मुद्रित के साथ डिजिटल रूप में भी संग्रहित करने की कोशिशें शुरू कर दी हैं। आज डिजिटल युग के कारण पत्रिकाऐं अत्यधिक मात्रा में प्रकाशित हो रही हैं और तरह तरह की पत्रिकाऐं जो की नये विकसित हुए विषयों पर प्रकाशित होती हैं उन्हें श्ज्पहहपदहश कहा जाता है। आज जिस भारी मात्रा मे प्रकाशन बड़ चुका है। ऐसे में सभी पुस्तकालऐं सभी प्रकाशनों को ले सके यह सम्भव नही है तथा अकसर ऐसा हो जाता है कि अपने उपभोक्ताओं को उनकी वांछित सूचनाएं कई बार पुस्तकालय उपलब्ध नही करा पाते हैं।

इस तरह की आने वाली समस्याओं के चलते डिजिटल पत्रिकाओं का जन्म हुआ। इनका उद्भव सन 1980 में हुआ लेकिन सही तरह से 1990 से ही प्रकाशित होना शुरू हुई। जहॉ पहले बड़ी–बड़ी प्रकाशन संस्थायें केवल एक पत्रिका ही प्रकाशित करती थी और कुछ संस्थानों उनको एकत्रित करके पुस्तकालयों तक पहुॅचाने का कार्य करती थी लेकिन उपरोक्त परिवर्तनों के परिणामस्वरूप आज भारतीय पुस्तकालयों ने भी मुद्रित प्रकाशनों की अपेक्षा इलेक्ट्रॉनिक या डिजिटल प्रकाशनों को अपनाना शुरू कर दिया है। यहां डिजिटल पत्रिकाओं के उद्भव, गुण–अवगुण, उनकी महत्वपूर्ण बातों आदि पर शैक्षाणिक पुस्तकालय के दृष्टिकोण से ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास किया जा रहा है।

2.उद्भव (Origin)

ऐसी पाठ्य सामग्री जो इलैक्ट्रॉनिक स्वरुप में उपलब्ध होती है एवं जिसे कम्प्यूटर की मदद से पढा जा सके। वह पाठ्य सामग्री जो कि इलैक्ट्रॉनिक रूप में कम्प्यूटर स्क्रीन पर पठनीय होती है ई–संसाधन कहलाती है। इन्टरनेशनल फेडरेशन ऑफ लाइब्रेरी एसोसियशन एण्ड इन्स्टीट्यूशन ;थ्स्।द्ध के अनुसार ई–संसाधन वे सामग्री है जो कि कम्प्यूटर एवं उसके सहायक उपकरणों के वांछित उपयोग हेतु संकेतित होती है।

अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसियेशन ; ।स्।द्ध ने ई–संसाधन को इस प्रकार परिभाषित किया हैः– सूचना के अधिग्रहण, संगठन, संग्रहण, पुनर्प्राप्ति एवं विस्तारण में कम्प्यूटर एवं अन्य प्रौद्योगिकियों का प्रयोग ई–संसाधन है। इन संसाधनों को इन्टरनेट के माध्यम से कहीं भी एवं कभी भी कम्प्यूटर पर पढ़ा जा सकता है। ई–संसाधन कम्प्यूटर पठनीय स्वरूप में होने के कारण इनके उपयोग के लिये कम्प्यूटर, पामटॉप, लेपटॉप जैसे हाईवेयर एवं ई–बुक्स रीडर एडोब रीडर जैसे साफ्टवेयरों की आवश्यकता होती है। ई–संसाधनों की प्रमुख विशेषता यह है कि इस रूप में उपलब्ध सूचनाओं के असीम संग्रह में से भी वंछित सूचना को आधार शब्द ;ज्ञमलूवतकद्ध का प्रयोगकर तीव्रता से खोजा जा सकता है। साथ ही हाइपर लिंक के माध्यम से वंछित स्त्रोत से जुड़कर विश्वसनीय सूचना को प्राप्त किया जा सकता है।

3.प्रकार(Types)

शैक्षणिक ग्रंथालयों में ई–संसाधन मुख्यतः दो प्रकार के प्रयुक्त होते हैं– (1) ऑफलाइन एवं (2) ऑनलाइन ई–संसाधन । ऑफलाइन ई–संसाधन ग्रंथालयों में उपलब्ध वे इलैक्ट्रॉनिक संसाधन हैं जो कि डिजिटल रूप में संग्रहीत उपकरणें में उपलब्ध होते हैं। जिन्हें बिना इन्टरनेट के उपयोग के असानी से कम्प्यूटर स्क्रीन पर पढ़ा जा सकता है। ये संसाधन सी.डी. (C.D.) डी.वी.डी. (D.V.D), डाटाबेस आदि के रूप में ग्रंथालय में उपलब्ध रहते हैं। ऑनलाइन ई–संसाधन, ग्रंथालय के बाहर स्थित स्त्रोत से इंटरनेट के माध्यम से अभिगम कर प्राप्त किये जाते हैं। कुछ प्रमुख ऑनलाइन ई संसाधन निम्नलिखित हैः–

1.ई–जर्नल्स (E-Journals)
2.ई–बुक्स (E-Books)
3.ऑनलाइन डाटा बेस (Online Datebase)
4.ई–रिर्पोट्स (E-Reports)
5.ई–क्लिपिंग (E-Clipping)
6.ई–थिसिस एवं डेजर्टेशन (E-Theses and Dissertations)
7.ई–न्यूजपेपर (E-Newspaper)
8.गुण (Advantages)

आसान अभिगम (Easy Access): उपभोक्ता को किसी एक प्रकाशन या पत्रिका को प्राप्त करने में पहले से कही अधिक आसानी होती है। वे अपनी वॉच्छित सामाग्री को ज्यादा से ज्यादा एक मिनट या उससे भी कम समय में अपने कम्प्यूटर की स्क्रीन पर प्राप्त कर सकते हैं। यहॉ तक की एक ही समय में उपभोक्ता अपने वॉच्छित विषय पर हजारों की संख्या में सूचना प्राप्त कर सकता है। नये परिवर्तनों से यह भी हो गया है कि यदि उपभोक्ता के वॉच्छित विषय पर जब भी कोई प्रकाशन उपलब्ध होगा तो उसे ''मैसेज एलर्ट'' के माध्यम से समय–समय पर सूचित भी किया जाता है।

समय की बचत (Save the Time): डिजिटाइजेशन के कारण प्रकाशनों को प्रकाशित करने से लेकर उपभोक्ताओं तक पहुचाने में

अब बहुत ही कम समय लगता है। अर्थात् सूचना का जब उद्भव होता है तो उसके कुछ ही समय अन्तराल पर वह उपभोक्ताओं (जिज्ञासुओ) तक उपलब्ध भी हो जाती है।

मुल्य (Cost): मुद्रित पत्रिकाओं और डिजिटल पत्रिकाओं के मूल्यों में कोई ज्यादा फर्क नही होता है। यहां तक की डिजिटल पत्रिकाऐं कम मूल्यों में प्रकाशित होती है।

मल्टीमीडिया (Multimedia): आज शोध के परिणामों को आसानी से इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। आज ई–पत्रिकाओं में ध्वनि, गति एवं तीन आयामी मॉडलों की सम्भवनाएं बनती जा रही है।

5.अवगुण (Disadvantages)

वित्तीय बाधाएं (Financial Constraints): डिजिटल पत्रिकाओं को एक जगह एकत्रित करना, उनके प्रिन्ट लेना, उन्हे बाइन्ड कराकर प्रदर्शित करना थोड़ा महंगा पड़ सकता है। इसके विपरित एक मुद्रित पत्रिका को प्रदर्शित करना सस्ता पड़ता है। डिजिटल पत्रिकाओं का अनुदान थोड़ा मुश्किल भी होता है। वही भारत के परिपेक्ष में हमारे पुस्तकालय डिजिटल पत्रिकाओं को लेना उतना आसान नहीं मानते।

सामाजिक बाधाएं (Social Constraints): जहां किसी मुद्रित पत्रिका को पढ़ना, उसको कॉपी करना आदि अभी भी आसान माना जाता है। वहीं इसके विपरीत ऑनलाइन पत्रिकाओं को पढ़ना, उनकी कॉपी करना अभी चलन में नही लिया जा रहा है।

तकनीकी बाधाएं (Technological Constraints): डिजिटल पत्रिकाऐं तकनीकी पर निर्भर करती हैं। यदि नेटवर्क की क्षमता ;चममकद्ध धीमी है तो उस पत्रिका को पढ़ने में भी आसान नही होता है। वही उपभोक्ता अभी तकनीकी को पूरी तरह अपना नही पाए हैं।

6.मुख्य विशेषताएं (Main Features)

स्थायित्व और संग्रहण (Stability and Storage): डिजिटल पत्रिकाओं को एक जगह एकत्रित करना, लम्बे समय तक के लिए सुरक्षित रखता और एक वैज्ञानिक विधि से व्यवस्थित करके रखना, जिससे अपनी वॉच्छित सूचना को कम समय में जल्द से जल्द प्राप्त किया जा सकता है, आसान है। इसके विपरीत यदि मुद्रित पत्रिकाओं की बात करें तो वे लम्बी अवधी तक सुरक्षित नहीं रखी जा सकती हैं क्योंकि या तो दीमक आदि के कारण सुरक्षित नहीं रह पाते या फिर जितने पुराने हो जाए उताना ही वे पेज पीले पड़ते जाते है और अन्त में फट जाते हैं।

आईपीआर मुद्दें (IPR Issues): मुद्रित पत्रिकाओं में कुछ समस्यायें आया करती हैं जैसे किसी लेखक के अपने विचार जो उन्होंने किसी पत्रिका मे प्रेषित किए है, उनके शोधों पर उनका ही अधिकार रहता था। इससे भी ऐसा ही है। डिजिटल पत्रिकाओं में भी लेखक के शोधों को प्रकाशक इस तरह से प्रेषित करता है कि जिससे यह साफ–साफ पता चलता है कि यह किसका शोध पत्र है। इससे लेखक के अधिकार पूर्ण रुप से सुरक्षित रहते हैं।

समीक्षाएं (Reviewing): आज ई–पत्रिकाओं में योगदान को चुनौतियां आ रही हैं क्योंकि शैक्षिणक संस्थानों में कार्यरत लोग इनकी वैधता पर सवाल उठा रहे हैं। फिर भी ये तीव्र गति से अपने विकास की तरफ बड़ रही हैं। इनकी समीक्षा प्रक्रिया भी तीव्र होती जा रही है। साथ ही साथ वीडियो और आडियो की भी सम्भावनाएं बड़ती जा रही हैं।

7.कुछ महत्तवपूर्ण मुद्दे (Some Important Issues)

चयन एवं अधिग्रहण (Selection and Acquisition): मुद्रित पत्रिकाओं की अपेक्षा डिजिटल पत्रिकाओं को मंगाना फिर भी काभी आसान है। जहॉ मुद्रित पत्रिकाओं में संस्था को मंगाने के लिए फोन करने से लेकर कई तरह के पत्राचार करने पडते हैं जिसमें समय अत्यधिक लग जाता है। वही डिजिटल पत्रिकाओं के सन्दर्भ में इसका उलटा है। इनमें विपरित गति से कम से कम समय में पत्रिकाओं का चयन भी किया जा सकता है और उन्हें संस्था के लिए मंगाया भी जा सकता है।

सूचीकरण (Cataloguing): इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं को भी मुद्रित पत्रिकाओं की तरह सूचीकरण किया जा सकता है। सूचीकरण के जो भी सिद्धान्त हैं, चाहे स्ब आदि, किसी के भी द्वारा इन्हें भी सूचीकृत किया जा सकता है।

उपभोक्ता अधिगम (User Access): मुद्रित पत्रिकाओं में जहॉ एक पत्रिका को केवल एक ही व्यक्ति पड़ सकता है वही इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं को एक ही समय पर एक से ज्यादा लोग उपयोग कर सकते हैं, कॉपी कर सकते हैं और उसका प्रिंट भी ले

सकते हैं।

कर्मचारियों और उपभोक्ताओं को प्रशिक्षण एवं सहयोग (Training and Support of Staff and Users): जहाँ एक ओर लगातार इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं का चलन बड़ता ही जा रहा है वही समय–समय पर संस्था के कर्मचारियों और उपभोक्ताओं को ट्रेनिंग कराते रहने से इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं को प्रयोग करने में आसानी होती है।

8.भारतीय पहल (Indian Initiatives)

यदि भारतीय परीप्रेक्ष की बात की जाए तो हमारी कुछ शैक्षणिक संस्थाओं ने कंर्सोसिया के द्वारा इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं को मंगाना शुरू कर दिया है। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :–

इन्डेस्ट (INDEST-Indian National Digital Library in Engineering Sciences and Technology, MHRD, New Delhi): इस कंर्सोसिया को भारत का पहला नियोजित एवं प्रभावित कंर्सोसिया कहा जा सकता है जो सरकारी अनुदान और अन्य अनुदानों से सुचारू रूप से संचालित किया जा रहा है। इसकी स्थापना भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने दिसम्बर 2003 में की। सदस्यता सदस्यों के लिए ई–संसाधनों के लिए मंत्रालय आवश्यक धन प्रदान करता है। इसका मुख्यालय आई आई टी दिल्ली है। इसके सदस्य 62 केन्द्रीय वित्तपोषित सरकारी संस्थान जिसमें आईआईटी, आईआईएम, आईआईएससी, एनआईटी, आईएसएम, आईआईआईटी आदि हैं और अन्य शिक्षण संस्थानों के लिए व वर्ग सर्मथन के लिए इसकी सदस्यता ले सकते हैं। संसाधनों के उपयोग के लिए सीधे प्रकाशकों से वेबसाइट उपलब्ध कराई जा रही है। यह भारत में तकनीकी शिक्षा प्रणाली के लिए सूचना के इलेक्ट्रॉनिक स्त्रोतों को वितरित करता है। इन्डेस्ट के आज 1373 सदस्य संस्थान है। यह सदस्यों के मामलें मे एशिया का सबसे बडा सघं है। 12,000 इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं को शामिल किया गया है। यह देश की एक महत्वाकांक्षी पहल है।

फोरसा (FORSA-Forum for Resources Sharing in Astronomy and Astrophysics, Hyderabad): खगोल–विज्ञान एवं खगोल–भौतिकी से संबिन्धत जितनी भी शैक्षणिक संस्थाएं हैं उन्होंने सन् 1981 में मिलकर एक कंर्सोसिया का निर्माण किया। ये संस्थाएं मिलजुल कर एक–दुसरे के साथ ज्ञान को बॉट रही हैं। यह कंर्सोसिया ऐस्ट्रोनॉमी एवं ऐस्ट्रोफिजिक्स से सम्बंधित उपयोक्ताओं को अधिक से अधिक सेवाएं प्रदान कर रहा है।

सेरा (CeRA-Consortium for e-Resources in Agriculture): यह कृषि के क्षेत्र का एक भारतीय कंर्सोसिया है जो राष्ट्रीय कृषि शोध तंत्र ग्रंथालयों के लिये भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ;प्ब्।त्द्व के द्वारा संचालित किया जा रहा है। इन्टरनेट सुविधाओं और टेक्नॉलाजी की मदद से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की महत्वपूर्ण पत्रिकाओं को ऑनलाइन आसानी से शोधार्थी एवं विषेषज्ञ प्राप्त कर सकते हैं। आईसीएआर एक महत्वपूर्ण संस्थान है जो कृषि के क्षेत्र में शोध, षिक्षा और प्रसार को बढाने की जिम्मेदारी लिए हुए है। इसकी स्थापना 16 जुलाई 1929 को षैवबपमजपमे त्महपेजतंजपवद ।बजए 1860श के अन्तर्गत की गई थी। इसकी स्थापना में रॉयल कमीषन ऑफ एग्रीकल्चर का महत्वपूर्ण योगदान है। इसका मुख्यालय कृषि भवन, नई दिल्ली में है। यह सम्पूर्ण देष में कृषि षोध एवं षिक्षा के लिए समन्वय, सलाह एवं प्रबंध के लिए एक शीर्ष निकाय ;।चमग ठवकलद्व की तरह कार्य कर रही हैं। कृषि में उद्यानिकी, मत्स्य पालन, पशुपालन एवं पशु विज्ञान शामिल है। इसकी स्थापना नवम्बर 2007 में कृषि से सम्बंधित शोधार्थियों एवं विषेषज्ञों को वैज्ञानिक पत्रिकाओं को ऑनलाईन उपलब्ध कराने के लिए की गई थी। शोधार्थी इसकी मदद से अपने शोध को उत्कृष्ट तरीके से सम्पन्न कर सकता है। सेरा 3511 से अधिक मुद्रित एवं इलैक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं के डेटाबेस को संग्रहित किए हुए है। ये पत्रिकाएँ विभिन्न प्रकार के प्रकाषकों से प्राप्त कर कंर्सोसिया में जोड़ी गयी हैं। प्च ।ककतमे की मदद से व्यक्ति या एक संस्था सेरा में उपलब्ध सारांश ;।इेजतंबजद्ध या पूर्ण पाठ्य (Fulltext) लेखों को प्राप्त कर सकता है। CeRA में 147 संस्थान/विष्वविद्यालय प्च ।ककतमे की मदद से जुड़े हुए हैं।

सीएसआईआर (CSIR-Council of Scientific and Industrial Research): जहॉ तक सीएसआईआर की बात कि जाये तो भारत का पहला एवं बड़ा कंर्सोसिया माना जाता है। यह सरकार द्वारा प्रदत अनुदान पर चल रहा है। सीएसआईआर ने 01/04/2000 में इस कंर्सोटियम उतारा है छप्ै।प्त के लिए जो प्छैक्व और छप्ैब्ड के विलय के गठन से बना और इसकी नॉडल एजेन्सी के रूप में पहचाना गया। दुनिया भर में उपलब्ध इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं को सीएसआईआर अनुसंधान और विकास गतिविधियों के लिएए एसटीटी कर्मचारिओं को प्रदान करने के लिए छप्ै।प्त एजेन्सी को बनाया। सीएसआईआर की ओर से म्समेअपत विज्ञान के साथ एक समझौते पर 1500 ई–पत्रिकाओं के उपयोग और अधिक विश्वव्यापी प्रकाशित पत्रिकाओं की सदस्यता लेने के लिए और अपने सूचना संसाधन को अधिक मजबूत बनाने के लिए सीएसआईआर संघ ने अपने उपयोग को बढाने के लिएए उपयुक्त पत्रिकाओं को बनाने के लिये संघ के आधार अन्य प्रदाताओं के साथ बनाये।

(JCCC & VIC, Hyderabad): इस कंर्सोसिया को जनवरी 2002 में Virtual Information Centre of ICICI Knowledge Park, Hyderabad के द्वारा तैयार किया था। इसके सदस्यों में University of Hyderabad, Indian Institute of Chemical Technology, Hyderabad, Center for Cellular and Molecular Biology,

Hyderabad, National Institute of Nutrition, Hyderabad, ICRISAT, Hyderabad, National Chemical Laboratory, Pune प्रमुख संस्थान सम्मिलित हैं। इस कंर्सोसिया के द्वारा अमेरिकन केमेकिल सोसाइटी जर्नल्स आरकाईव एवं स्प्रिंगर आरकाईव तथा ऐमरल्ड जर्नल्स आरकाईव में उपलब्ध सभी पत्रिकाओं को निःशुल्क एवं स्वतंत्र खोजा जा सकता है।

हेलीनेट (HELINET-Health Science Library & Information Network): इस कंर्सोसिया को 2002 में राजीव गॉधी चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय (Rajiv Gandhi University of Health Sciences-RGUHS) के डिजिटल ग्रथालय के लिए तैयार किया था। यह चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र का देश का पहला कंर्सोसिया है। इस कंर्सोसिया के द्वारा उपलब्ध सभी पत्रिकाओं को खोजा जा सकता है।

यूजीसी इन्फोनेट (UGC Infonet): यूजीसी ने भारत में ई–पत्रिकाओं के लिए 28 दिसम्बर 2002 कंर्सोसिया शुरू किया जो सदस्य विश्वविद्यालयों को पत्रिकाओं का उपयोग करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर संचार नेटवर्क प्रदान करता है। यह शिक्षा और अनुसंधान नेटवर्क बुनियादी सुविधाओं के अर्न्तगत बैडबिइथ संसाधनों और गुणवत्ता सेवा का अश्वासन इष्टतम उपयोग प्रदान करते हैं। अरनेट के सहयोग से यूजीसी की ओर से INFLIBNET UGC- INFONET परियोजना को निष्पादित कर रहा है। इस कंर्सोटियम का उद्देश्य इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस का उपयोग और पूर्णपाठ्य अनुसन्धानकर्ता और शैक्षणिक समुदाय द्वारा देश में पत्रिकाओं की पहुँच के प्रयोग को बढावा देना है।

यह कंर्सोसिया पत्रिकाओं की सदस्यता लेता है जो प्रकाषित होते हैं अमेरिकन केमेकिल सोसाइटीए अमेरिकन इन्स्टीटयूट ऑफ फिजिक्सए अमेरिकन फिजिकल सोसाइटीए इन्स्टीटयूट ऑफ फिजिक्स वार्षिक समीक्षाए केमब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस प्रोजेक्ट MUSE रायल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री इत्यादि। शिक्षण के सभी क्षेत्रों में, जैसे विज्ञान प्रोधोगिकी, चिकित्सा, सामाजिक विज्ञान और मानविकी, देश में उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए यूजीसी इनफोनेट सेवाएं प्रदान करता है। यह कार्यक्रम पत्रिकाओं की भारी कमी को दूर करने में मदद करता है। साहित्य की बड़ती मांग और उपलब्ध संसाधनों की कमी से कंर्सोसिया मॉडल को 80 से 90 प्रतिशत के बीच सूची मूल्य पर छूट मिल जाती है। आज यूजीसी से सबद्व कुल 172 विश्वविद्यालय इस सेवा का लाभ ले रहें हैं। दूरस्थ शिक्षा से जुडे केन्द्रों के शोधकर्ताओं एवं छात्रों को पाठ्य सामग्री एवं पत्र–पत्रिकाएं उपलब्ध कराने यह एक महत्तवपूर्ण एवं सशक्त माध्यम बन गया है।

9.निष्कर्ष (Conclusion)

ई–प्रकाशन के आगमन से पत्रिका प्रकाशन में एक क्रांति आ गई है। भारत में ज्यादातर शैक्षिणक संस्थाएं जो कि मुद्रित पत्रिकाओं को मंगाती हैं वे उपभोक्ताओं की प्रत्येक वांछित सूचना को प्रदान नही कर सकती हैं। उसका कारण आर्थिक कठिनाइयां भी होती हैं। तथापि जितनी लागत में मुद्रित पत्रिकाएं प्राप्त की जाती हैं उससे भी कम लागत में ज्यादा इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाएं प्राप्त की जा सकती हैं एवं एक ही पत्रिका को एक ही समय में एक से ज्यादा उपभोक्ता प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए मुद्रित पत्रिकाओं की अपेक्षा सूचना के लिए इलेक्ट्रानिक पत्रिका ज्यादा उपयोगी साबित होती हैं।

10.ग्रंथसूची (References)

1.American Library Association (1983). The ALA Glossary of Library and Information Science. Chicago: ALA.
2.Arora, Jagdish and Agarwal, Pawan (2003). Indian Digital Library in Engineering Science and Technology (INDEST) consortium: Consortia based subscription to electronic resources for technical education system in India: A Government of India Initiative. Paper presented during CALIBER-2003, during 14-15, Feb., pp. 271-290.
3.Chan, Liza (1999). Electronic journals and academic libraries. Library Hi-tech, vol. 17, No.1, pp. 10-16.
4.Halliday, Leah (2001). Progress in Documentation developments in Digital journals. Journal of Documentation, vol. 57, No. 2, pp. 260-283.
5.INDEST Consortium Website. http://paniit.iitd.ac.in/indest/
6.International Federation of Library Association and Institutions. International Standard Bibliographic Description for Electronic Resources. http://www.ifla.org
7.Lee, Hur-Li. (1993). The Library Space Problem, Future Demand, and Collection Control, Library Resources & Technical Services, 37 (2), 147-166.
8.Mange Ram et.al. (2005). Digital preservation: A challenge to libraries. Library Progress (International), vol. 25(1), pp. 43-48.

11.Ravichandra Rao, I.K. (2000). Sources of Information with Emphasis on Electronic Resources. DRTC Annual Seminar on Electronic Sources of Information. 1-3 March 2000.
12. Schrock, Kathy (1999). Teaching Media Literacy in the Age of the Internet. Classroom Connect. http://school.discoveryeducation.com/schrockguide/pdf/weval.pdf.
13.Subba Rao, Siriginidi (2001). Networking of Libraries and Information Centres: Challenges In India, Library Hi Tech, 19(2), 167-179.
14. Suber, P and Arunachalam, S. (2005). Open Access to Science in the Developing World, World-Information City. Tunis: WSIS.
15.Woodward, Hazel et.al. (1997). Electronic journals: myths and realities. OCLC Systems & Services, vol.13, No.4, pp. 144-151.